

1040

Complete

C	:	:	:	Harminat Stoba	:	Title
:	:	:	:	:	:	Author
:	:	:	:	:	:	Editor
Sk	:	:	:	:	:	Year, Vols.
:	:	:	:	:	:	Publisher
1040	:	:	:	:	:	Remarks

श्रीहनुमते नमः॥ ३॥ नमो हनुमते नमो मातुल्ये नमः श्रीराम नमः ॥
 मां सायते नमः॥ १॥ वंदे नमो वानर वीराय सुखायः सख्य कारिणे॥
 काविरुहनायाय देवासागरतारणे॥ सितशोकवर्जनाय रामभुज
 धराकरे॥ बाणंतुल्यधैराय कारिणे ते नमो नमः॥ ३॥ मेघनादखरध
 सकारिणे ते नमो नमः॥ अशोकवर्जविधुसकारिणे नयकारिणे॥ ४॥ वायु
 पुत्राय वीराय आकाशोदरगमिने॥ वनपालशिरधैर्यकायासादने
 ५॥ सुखलक्षणकनकसुखदीर्घलोकगुलधरिणे॥ सौमित्रिजयदात्रे वराम १
 दुताय ते नमो नमः॥ ६॥ अहोरात्रधक्त्रैलव्रह्मशर्पे निवारणे॥ लक्ष्म
 णगमहाशक्तिद्युतहोमविनाशने॥ ७॥ रक्षोघाय रिपुघाय नृपघाय वननमः
 रक्षवानरवीरकषाणदाय नमो नमः॥ ८॥ परमैश्वर्यलघूय शस्त्रास्त्रघाय ते नमः

धिषद्याय विषद्याय नमः ॥ १० ॥ महा नय रिपु द्याय नमः ॥
 एककारिणे परदेरितमं यंत्राणं संनकारिणे ॥ ११ ॥ पयः पाखा एत
 रणेकारणाय नमो नमः ॥ तलार्धमं रुद्राणां सकारिणे नयहारिणे ॥ १२ ॥ नर
 युधाय निमाय दत्ताय धधराय च ॥ रिपु माया विनाशाय मा ज्ञाते कक्का
 रक्षिणे ॥ १३ ॥ प्रतिग्रामस्थिताय शरहो नमः त्वर्धक्षिणे ॥ कशत शैल शस्त्रा दुमश
 स्त्राय ते नमः ॥ १४ ॥ कोपिन वाससे तुभ्यं राम नमः रताय च ॥ दक्षिण शोभा
 स्त्राय शतं रौद्रयात्मने ॥ १५ ॥ कृत्वा नृपतयं यथाय सर्वकृत्रहराय च ॥ १
 स्वात्मा ज्ञाया यस्मिं ग्रामं सर्वो संज्ञय धूम्रिणे ॥ १६ ॥ नृका नां रिपु वा देषु
 संज्ञा मे जय दाधि ने किं किला बुबुको लु ॥ १७ ॥ यो र श शृक रं यत् ॥ १८
 सर्वो जवाधि संज्ञे नकारिणे वनचारिणे ॥ महा वरु फला हार संज्ञाय तव
 षतः ॥ १९ ॥ महा एव शिला बध्नो बुधाय ते नमः वा दे विवादे संग्रामे च ये यो
 रं महा वने ॥ २० ॥

३

सिंहवाचतस्करेषु पठन् स्तोत्रं नयं ननु ॥ दिवा नृते नयेत्वा धौ विषे स्थाव
 रं नृग मेरु ॥ राजशस्त्र नयेत्वा जेत शराज ह नयेत् पुलक ले सपे निहा वष्टौ
 दुर्गिहे प्राण सं हवे ॥ २१ ॥ पठन् स्तोत्रं प्रभु लोत्र जयेत्वाः सवती नर ॥ त
 स्पृष्ट्वा पि नय नास्ति हनु मत्सत पानात् ॥ २२ ॥ सर्वदा वै त्रिकालं य
 तनाय मे दे सव सर्वान् कान् नवा प्रो जात्र कार्या विवा ॥ २३ ॥ विनिष्प
 उते स्तोत्रं च ता द्यो ए समु दार तं ॥ यः पठिष्यति सिंघाल सिधयेत् तनुर
 स्तिताः ॥ २४ ॥ इति श्री सुदेव नि संहितो दित विनिष्प एता र्क्ष संवादे विनि
 षण्योक्तं हनु मत्सोत्रं संपूर्णं ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ शुभं मस्तु अस्तु लेख
 क पाठ क यो शुभं न वडा ॥ ६ ॥ अस्तु कल्याण मस्तु ॥ न वडा अस्तु

[illegible]